Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

नयी कविता का उदय, विकास तथा स्वरूप

Rachna[1]* Dr. Sumitra Chaudhary[2]

[1] Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Assistant Professor, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – *उन इने-गिने भारतीय रचनाकारों में से एक हैं जिन्होंने बीसवीं शताब्दी में भारतीय संस्कृति, भारतीय परम्परा, भारतीय आधुनिकता के साथ साहित्य-कला-संस्कृति, भाषा की बुनियादी समस्याओं, चिन्ताओं, प्रश्नाकुलताओं से प्रबुद्ध पाठकों का साक्षात्कार कराया है। व्यक्तित्व की खोज, अस्मिता की तलाश, प्रयोग-प्रगति, परम्परा-आधुनिकता, बौद्धिकता, आत्म-सजगता, कवि-कर्म में जटिल संवेदना की चुनौती, रागात्मक सम्बन्धों में बदलाव की चेतना, रूढि और मौलिकता, आधुनिक संवेदन और सम्प्रेषण की समस्या, रचनाकार का दायित्व, नयी राहों की खोज, पश्चिम से खुला संवाद, औपनिवेशिक आधुनिकता के स्थान पर देशी आधुनिकता का आग्रह, नवीन कथ्य और भाषा-शिल्प की गहन चेतना, संस्कृति और सर्जनात्मकता आदि तमाम सरोकारों को अज्ञेय किसी न किसी स्तर पर रचना-कर्म के केन्द्र में लाते रहे हैं। उन्होंने नयी रचना-स्थिति की चुनौतियों पर अनेक कोणों से विचार किया हैं आधुनिक हिन्दी-साहित्य में पुनः सम्भव बनाया। वे साहित्य की सभी विधाओं में लगभग साठ वर्षों तक साहित्य-साधना में निरन्तर समर्पित रहे। (वह हिन्दी-भाषियों के साथ अहिन्दी भाषियों के सर्वाधिक प्रिय रचनाकार हैं।) आज का प्रबुद्ध पाठक उनके सृजन-चिन्तन के प्रति एक विशेष प्रकार के गहरे लगाव का अनुभव करता रहा है। 'अज्ञेय रचनावली की प्रकाशन-योजना पाठक के उसी गहरे लगाव को पूरा करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयत्न है। अज्ञेय की साहित्य-यात्रा निरन्तर उत्कर्ष की ओर जानेवाली गरिमामय यात्रा का इतिहास सामने लाती है। सच बात तो यह है कि स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद के भारतीय साहित्य को वे दूर तक प्रेरित-प्रभावित करते रहे हैं।*

----------X----------

प्रस्तावना

प्राचीनकाल से ही हिंदी भाषा भारत देश में प्रचलित थी। विदेशी लोग समस्त भारतीय भाषाओं को हिंदी, हिंदवी या हिंदिका के नाम से पहचानते थे। इसी हिंदिका शब्द के कारण अंग्रेज भारत देश को इंडिया के नाम से पहचानते थे। 'अल्बेरूनी (11वी शती), फारसी कवि औफी (13वीं शती), अमीर खुसरो (13वीं-14वीं शती) आदि मुस्लिम लेखकों ने भी 'हिंदी' का प्रयोग भारत की सभी भाषाओं के लिए किया है।

किंतु आजकल जिस भाषा को हम हिंदी के नाम से जानते हैं, उस भाषा का जन्म अपभ्रंश से हुआ था। हेमचंद्र ने अपने व्याकरण में अपभ्रंश के कुछ उदाहरण दिया था। उन उदाहरणों से यह निश्चित किया गया है कि हेमचंद्र के समय से पूर्व ही हिंदी का विकास एक लंबे अरसे से प्रारंभ हो गया था। इसलिए आचार्य शुक्ल ने कहा 'अतः हिंदी साहित्य का आदिकाल संवत् 1050 से लेकर संवत् 1375 तक माना जाता है। डॉ. नगेन्द्र का अभिमत है कि 'किंतु हिंदी भाषा का वास्तविक आरंभ 1000 इ. से माना जाता है। इन दोनों के तार्किक विचारों से सहमत होते हुए यह माना जाता है कि कृ विगत लगभग सहर्स वर्षों से हिंदी में लिखित साहित्य की परंपरा अनवरत चली आ रही है।'04

01. साहित्य विश्वकोश - संपादकः डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त - पृष्ठः 861

02. आदिकाल, प्रकरण 1 - हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल

03. भूमिका - पुनलेखन की समस्याएँ - हिंदी साहित्य का इतिहास - संपादकः डॉ.नगेन्द्र - पृष्ठ:13

04. हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास - हिंदी साहित्य का सुबोध इतिहास - बाबु गुलाब राय - निःसंदेह, हिंदी कविता-लता का प्रवर्धमान बीजांकुर लगभग एक हजार वर्ष पहले सत्यरूपी साहित्य की भारतीय भूमि पर अंकुरित हुआ है।

www.ignited.in

इस सहस्र वर्ष की अवधि में हिंदी भाषा की सर्जनात्मक लतिका में निरंतर अनंत विधा के दल, कुटमल, कुसुमों एवं परागों की प्रक्रियाएँ दृश्यमान एवं अदृश्यमान होती रही हैं। आज की हिंदी कविता का साफल्य अनेक युगों की अंदरूनी तथा बाहरी परिस्थितियों की प्रतिक्रिया है। आदिकाल में सिद्ध, नाथ और जैन काव्यों की आध्यात्मिक चेतना देदीप्यमान हुई थी। नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला नामक विद्यापीठ बौद्ध मत के सिद्धों के लिए केंद्र थे। बौद्धमत के प्रचार के लिए वे अपनी रचनाएँ दक्षिण भारत में द्रविडभाषाओं में और उत्तर भारत में देशी भाषा में अर्थात् अपभ्रंश या पुरानी हिंदी में लिख रहे थे।

सिद्धों ने ...जो साहित्य जनभाषा में लिखा, वह हिंदी के सिद्ध साहित्य की सीमा में आता है। जनता को अपनी ओर आकर्षण करने के लिए श्रृंगारिक वर्णन इनकी रचनाओं में कुछ अधिक ही नजर आता रहा। दृश्यकाव्यों में हास्यरस के नाम पर असभ्यता को बढ़ावा दिया गया था।

नयी कविता के प्रयोजन

नयी कविता कोई कवितावाद नही है। नयी कविता आधुनिक कविता की युगधर्म के अनुकूल परिवर्तित एक शाखा है। पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से आधुनिक कविता का विकास हुआ। अतः नयी कविता पर भी पाश्चात्य चिंतकों का प्रभाव रहना सहज है। किंतु नयी कविता किसी एक वाद से न जुड़कर सभी कवितावादों को अपना चुकी थी। इसलिए इस पर भारतीय साहित्य चिंतकों के विचारों का भी प्रभाव है।

अनेक चिंतकों ने वसवर्थ के 'Spontaneous overflow of powerful feelings' को उद्धृत करते हुए कहा है कि 'जब काव्य का न होना कवि के वश की बात नहीं है- तब प्रतिभा आवेश, जो पुण्यपरिपाकवश संभव होता है- मे प्रयोजन का सवाल ही नहीं उठता। काव्य का प्रयोजन आनंद मानना कोई आधुनिक विचार नहीं है। भारत के प्राचीन आलंकारिकों ने भी यहीं विचारों को उद्घोषित किया था।

विनोदकरणं लोके नाट्य मेतद भविष्यति।।' 86 इसी प्रकार से साहित्य मीमांसाकार ने कहा था कि 'ईदृशं भावयन् काव्यं रसिकः परमं सुखं प्राप्नोति। अभिनवगुप्त का अभिमत भी इसी प्रकार से 'प्रीति रेव प्रधानम् ... प्राधान्येनानंद एवोक्तः' था। भामह ने 'धर्मार्थ काममोक्षेषु वैलक्षण्यं कलासु च, प्रीतिं करोति कीर्ति काव्यनिबंधनम कहते हुए आनंद को ही प्राधान्य देकर अन्य प्रयोजनों को आनुशंगिक माना था।

नयी कविता की उपलब्धियाँ

जब किसी भी कार्य करने के लिए एक लक्ष्य रहता है तब वह कार्य की सफलता से लक्ष्य की सिद्धि होती है। साहित्य में काव्य रचना के लक्ष्य को काव्य प्रयोजन, और काव्यप्रयोजन की सिद्धि को उपलब्धि कहा जाता है। पूर्व पृष्ठों में नयी कविता के काव्यप्रयोजन के विषय में संक्षेप में बताया गया है। यहाँ पर नयी कविता की उपलब्धियाँ बताई जा रही हैं।

रीतिकालीन कविता में पौराणिक परिवेश ही था। छायावादी कवियों ने पाठक को काल्पनिक जगत् की यात्रा करायी तो प्रगतिवाद ने मार्क्सवाद से जनता को प्रभावित किया था। इसलिए इनकी कवितावस्तु कुछ हद्द तक सीमित हो गई थी। नयी कविता किसी कवितावाद से जुड़ी हुई नहीं है। नयी कविता के कवियों ने हर वाद की खूबियों को अपनाने की कोशिश की, और नयी नयी दिशाओं को ढूँढने में लगे रहे। नयी कविता बातचीत की कविता है, 'जंगल से जनता तक' की यात्रा की कविता है, सड़क से संसद तक जोड़ने वाली कविता है। 19 सामान्य मानव से महामान्य महात्मा तक सभी विषय नयी कविता के वस्तु हो चुके हैं। इस बात से सम्मत होते हुए देवेश ठाकुर ने कहा कि 'जीवन के सभी उपकरण अब कविता के बिल्कुल साम्य की स्थिति उत्पन्न करदी।' 100 अतः असीमित कवितावस्तु का क्षेत्र नयी कविता की उपलब्धियों में से एक है।

नयी कविता का क्रमिक विकास

हर एक क्रिया के लिए प्रतिक्रिया होती ही रहती है। साहित्यिक क्षेत्र में भी इसी प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ होती रही हैं। प्रगतिवाद ने छायावाद की प्रतिक्रिया के रूप में जन्म लिया था तो प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया के रूप में प्रयोगवाद ने जन्म लिया। प्रयोगवादी कविता धीरे धीरे नयी कविता में बदल गई। जैसे प्रगतिशील कविता में और नयी कविता में भिन्नता देखना कठिन हो जाता है, वैसे ही प्रयोगवादी कविता और नयी कविता के बीच निर्दिष्ट प्रमाण में भिन्नता नही देखी जाती है।

अनेक प्रयोगवादी कवियों ने ही नयी कविता को लिखा और लिखवाया। नयी कविता के लेखक, प्रवर्तक एवं समर्थक अज्ञेयजी ने प्रयोगवादी कविता को ही नयी कविता के रूप में स्वीकारा था।

समस्या का विवरण

प्रयोगवाद की साप्तकी परंपरा ही नयी कविता के विभिन्न आयाम हैं। नयी कविता की इस विकासोन्मुख संवृद्धि में इन

www.ignited.in

सभी 28 रचनाकारों ने तो महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ही है। परंपरा से हटने के कारण सभी प्रयोगवादी कवियों को सन्मान नही मिला था। नयी कविता का आरंभ भाषा के प्रयोगों के आधार पर हुआ था। 'हिंदी काव्यपरंपरा में प्रयोगवादी शैली कभी भी अधिक सम्मानसूचक नहीं रही।' 58 प्रयोगवाद में सामान्यतः नये अभ्यास और नये निर्माण प्रक्रियाओं को मुख्यता दी गई थी।

सप्तकी परंपरानुगत कविता को ही नहीं, बल्कि नये साहित्य के समीक्षकों ने नयी कविता को उस कविता का पर्याय माना है जो इन दिनों छोटे छोटे पत्र-पत्रिकाओं में भी छपा करती है।

नयी कविता का चैथा दौर इंदिरा गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी के नेतृत्व में राजकीय परिवेश में आयी हुई नयी विचार-धारा से जुड़ कर प्रारंभ हुआ और वर्तमान में भी सक्रियात्मक प्रक्रियाओं से जुड़ा हुआ है।

डॉ.रामदरश मिश्र के विचार में 'विज्ञान के अविष्कार और विकास ने ही आधुनिक युग के समस्त मूल्यों का निर्माण और विकास किया है।' 64 प्रगतिवादी कविता तथा नयी कविता का लक्ष्य इस प्रकार के मूल्यों की संस्थापना है।

नयी कविता का क्रमिक विकास

हर एक क्रिया के लिए प्रतिक्रिया होती ही रहती है। साहित्यिक क्षेत्र में भी इसी प्रकार की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ होती रही हैं। प्रगतिवाद ने छायावाद की प्रतिक्रिया के रूप में जन्म लिया था तो प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया के रूप में प्रयोगवाद ने जन्म लिया। प्रयोगवादी कविता धीरे धीरे नयी कविता में बदल गई। जैसे प्रगतिशील कविता में और नयी कविता में भिन्नता देखना कठिन हो जाता है, वैसे ही प्रयोगवादी कविता और नयी कविता के बीच निर्दिष्ट प्रमाण में भिन्नता नही देखी जाती है।

अनेक प्रयोगवादी कवियों ने ही नयी कविता को लिखा और लिखवाया। नयी कविता के लेखक, प्रवर्तक एवं समर्थक अज्ञेयजी ने प्रयोगवादी कविता को ही नयी कविता के रूप में स्वीकारा था।

दुष्यन्त कुमार के गीत

दुष्यन्त कुमार के गीतों का अलग से कोई संकलन प्रकाशित नहीं हुआ था। उनके जीवन-काल में ये गीत असंकलित ही थे। उनके लगभग 55 गीत प्राप्त हुए जो डॉ. विजय बहादुर सिंह के सम्पादन में 'दुष्यन्त कुमार रचनावली के पहले भाग (2007) में प्रकाशित हुए हैं। दुष्यन्त कुमार ने जब कविता लिखना शुरू किया तब उनके आस पास कविता की कई प्रवृत्तियाँ और धाराएँ सक्रिय थीं। प्रगतिवादी आन्दोलन अपने उभार पर था, 'तारसप्तक' प्रकाशित हो चुका था। प्रगति और प्रयोग को लेकर साहित्यिक खेमों में काफी बहस छिड़ी हुई थी, पर दुष्यन्त कुमार तब तक इस बहस से अपरिचित ही थे। उन तक जो साहित्य पहुँच रहा था वह या तो कवि सम्मेलनों के माध्यम से था या कस्बों में उपलब्ध साहित्यिक कृतियों और पत्रिकाओं के जरिए। यों तो कहा जा सकता है कि दुष्यन्त ने आठवीं कक्षा से कविता लिखना शुरू कर दिया था और जान भी लिया था कि वे एक कवि हैं और कविता के बीज उनमें पूरी तरह से विद्यमान हैं तब भी उनके कवि का वास्तविक श्रीगणेश आजादी के बाद ही होता है।

उनकी प्रारम्भिक कविताओं की हस्तलिखित पुस्तिकाओं पर जो तारीखें पड़ी हुई हैं वे 1948-49 की हैं। तब तक उनकी उम्र 14-15 वर्ष की हो चुकी थी और एक किशोर कवि की प्रतिभा अपनी पूरी ताकत के साथ उनमें हिलोरें ले रही थी। शिक्षा की दृष्टि से वे उन दिनों हाईस्कूल के छात्र थे। पढ़ाई के लिहाज से उन्होंने नहटौर के हाईस्कूल में अपना नाम लिखा लिया था और उनकी एक साहित्यिक मित्रमण्डली भी तैयार हो गई थी। नहटौर आज भी एक कस्बे से ज्यादा कुछ नहीं है। आजादी की खबर जरूर वहाँ भी पहुँची होगी। लेकिन जैसा कि तमाम गाँवों के साथ हुआ लोगों ने जुलूस निकाले होंगे, नारे लगाए होंगे, सामूहिक रूप से 'जयहिन्द' कहा होगा और खुशी की यह आँधी आई गई हो गई होगी। निश्चय ही यह एक ऐसी आजादी थी जो गाँवों तक अपने पैदा होने की खबर फैलाकर धीरे-धीरे दिल्ली और प्रदेश की राजधानियों तक सिमटने लगी थी। आम आदमी को छूने लायक अभी इसके पास कुछ न था। दुष्यन्त ने भी आजादी को इसी रूप में पाया होगा क्योंकि उनकी कविताओं में इतनी बड़ी राजनीतिक घटना का जिक्र तक नहीं है। .

उन दिनों नए से नए आन्दोलन और कविता के बारे में अधुनातन धारणाएँ जन्म ले रही थीं पर जो कविता छोटे शहरों और कस्बों तक पहुँच रही थी वह यह नहीं थी। बच्चन की 'मधुशाला' तब भी अपनी लोकप्रियता के शिखर पर थी। अंचल, नरेन्द्रशर्मा, शम्भुनाथ सिंह, क्षेम, सुमित्रा कुमारी सिन्हा जैसे कवि कवि सम्मेलनों के मंच पर प्रतिष्ठित हो चुके थे। ये सभी गीत शैली के कवि थे और छायावाद की हासोन्मुखी सौन्दर्यवादी रुझान से ग्रस्त थे। छायावाद ने प्रेम को जिन गहराइयों और ऊँचाइयों तक ले जाकर छोड़ा था वहाँ तक तो इनकी पहुँच नहीं थी पर ये कवि प्रेम को अपने तौर-तरीकों से इस्तेमाल कर रहे थे। किसी के लिए वह रूप था, किसी के लिए वासना, किसी के लिए उद्गार तो किसी के लिए प्रणय निवेदन। इस प्रकार गीत कविता ज्यादातर प्रेम कविता थी और उच्छवासमूलक थी। यह कम आश्चर्यजनक नहीं है कि हिन्दी कविता का संसार जितना विस्तृत और व्यापक हो

www.ignited.in

रहा था वे कवि अपनी जिम्मेदारियों से उतने ही बेखबर थे। कभी-कभी कहीं कोई चिनगारी फूट तो पड़ती थीय पर आग बन जाने की ताकत उसमें नहीं थी। इसलिए सारी कविता एक कुएँ की तरह थीं जिसमें न तो बाहर की आवाजें पहुँच सकती थीं और न ही भीतर की आवाजें बाहर की दुनिया से अपना रिश्ता जोड़ सकती थीं। बड़े चिकने और सुघड़ गीत उन दिनों लिखे गए। पर ऐसा जान पड़ता है जैसे उन दिनों गीत लिखने का मतलब अपने श्रोताओं को झुमाना भर हो। इसलिए उन दिनों के गीतों में प्रदर्शनप्रियता भी कम नहीं थी। गीत जब बहिर्मुख हो जाए तो उसे अपनी प्रामाणिकता के लिए लोकानुभव का सहारा लेना पड़ता है। अपने को सच्चाइयों और समस्याओं की उस धरती से जोड़ना पड़ता है जो उसे प्रासंगिक बनाए रखती हैं, पर उन गीतों में शायद इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। वे कवि नामधारी एक व्यक्ति के उद्गार होकर रह गए और यही उद्गारमूलकता बाद में आलोचकों के लिए निशाना बनी। .

जैसी पंक्तियाँ कवि के यथार्थ बोध को प्रकट करती हैं। धीरे-धीरे वह अपने समय के प्रति अधिक सजग हो रहा था और कोरे सपनों की भाषा से अपने रिश्ते तोड़कर प्रत्यक्ष व्यवहार की भाषा और दुनियादारी की ओर लौट रहा था। उसके इन गीतों में क्रमशः चिन्तन की जमीन भी उभरने लगी है जहाँ वह सोचने-विचारने की मुद्रा में हमारे सामने है। वह अब समझने लगा है कि जिन्दगी के स्वप्न पर श्वास क्या एक झोंके में बदल जाती शक्ल जीवन की इस स्थिरता और परिवर्तनधर्मिता को तो वह सहज स्वाभाविक मानकर स्वीकार लेता है किन्तु समकालीन मनुष्य की स्वार्थ वृत्ति को लेकर वह काफी चिन्तित है। श्ओ सेमल के वृक्षश् शीर्षक कविता में वह लिखता है तेरे पत्तों की हरिताभ छटा को लखकर तेरी सघन डालियों के नीचे क्षणभर कभी-कभी तो बैठ बसेरा कर लेते हैं थके विहंगमय नहीं किसी से तेरा कोई यद्यपि नाता फिर भी सबके काम खुशी से है तू आता, पर मेरे तो इस धरती पर सब अपने हैं मानव होकर प्यार न मानव को कर पाता। ओ सेमल के वृक्ष खड़ा मेरे समान ही तू धरती पर तू जड़ में चेतन कहलाता!

इस गीत में कवि दुष्यन्त कुमार समकालीन मानवचरित्र की अमानवीय प्रवृत्ति का उल्लेख करते हुए समस्त मानव समाज की ओर से चिंता व्यक्त करते हैं जिस कवि ने स्वप्नों वाले प्रेमगीतों से अपनी यात्रा प्रारम्भ की थी वही धीरे-धीरे सामाजिक जीवन की कठोर धरती पर अपने पाँव रख रहा था।

अध्ययन का उद्देश्य

1. दी गई कविता से आनंद को समझना और प्राप्त करना।
2. कविता में भाषा और विचार की सुंदरता की सराहना करना।

शोध क्रियाविधि

नयी कविता कोई कवितावाद नही है। नयी कविता आधुनिक कविता की युगधर्म के अनुकूल परिवर्तित एक शाखा है। पाश्चात्य साहित्य के प्रभाव से आधुनिक कविता का विकास हुआ। अतः नयी कविता पर भी पाश्चात्य चिंतकों का प्रभाव रहना सहज है। किंतु नयी कविता किसी एक वाद से न जुड़कर सभी कवितावादों को अपना चुकी थी। इसलिए इस पर भारतीय साहित्य चिंतकों के विचारों का भी प्रभाव है।

नयी कविता की उपलब्धियाँ

जब किसी भी कार्य करने के लिए एक लक्ष्य रहता है तब वह कार्य की सफलता से लक्ष्य की सिद्धि होती है। साहित्य में काव्य रचना के लक्ष्य को काव्य प्रयोजन, और काव्यप्रयोजन की सिद्धि को उपलब्धि कहा जाता है। पूर्व पृष्ठों में नयी कविता के काव्यप्रयोजन के विषय में संक्षेप में बताया गया है। यहाँ पर नयी कविता की उपलब्धियाँ बताई जा रही हैं।

नयी कविता की सीमाएँ

सामान्यतः साहित्य कठोर यथार्थों को भी कलासौंदर्य से भर देता है। नयी कविता ने भी कलादृष्टि से अनेक कठोर यथार्थों को सरल और सुंदर बना दिया है। प्रगतिवादी कवियों ने कठोर यथार्थों को अतिकठोर रूप में पेश कर रहे थे तो रूसी विचार-धारा को रोकने के लिए नयी कविता के कवियों ने सुगम और सरल शैली को अपनाया। किंतु इस नयी शैली में वह प्रभाव नहीं नजर आता है जो कि प्रगतिवादी कविता की शैली में था। अतः नयी कविता प्रगतिशील विचारों की कविता होते हुए भी प्रगतिवादी कविता जैसी प्रजारंजक बन न सकी।

रीति कालीन कविता दरबारी कविता बन चुकी थी तो छायावादी कविता पलायनवादी कविता कहलाई थी। भक्तिवाद के बाद प्रगतिवाद ने कविता को सामान्य जनता से जोड़ा था। नयी कविता सामान्य जनता से जुड़ न सकी। कुछ विशिष्ट पाठकों, विद्वानों और चिंतकों से जुड़ी रही। पत्र-पत्रिकाओं से निकल कर जनवाणी तक पहुँच न सकी।

डेटा विश्लेषण

नयी कविता में जितना बड़ा कवि होता है उतना ही अधिक वैयक्तिक या निजी प्रतिक्रियाओं से भरी कविताएँ लिखता है। इससे नये कविता में विषय वैविध्य के साथ शिल्पविधा में

www.ignited.in

वैविध्य भी बढ़ गया है। एक दो असमर्थ एवं असहज भावुक कवियों के कारण कुछ हद तक अस्पष्टता एवं असंप्रेषणीयता का दोष नयी कविता पर लगाया जाता है।

नयी कविता में कुछ प्रौढ़ कवियों के कारण देशी और विदेशी दर्शनों का मिश्रण नये रूप में उभरता है। राष्ट्रवाद से हट कर सामान्य पाठक विश्वमानव की दृष्टि को अपनाने में नयी कविता प्रोत्साहन दे रही है।

उपसंहार

नयी कविता में जितना बड़ा कवि होता है उतना ही अधिक वैयक्तिक या निजी प्रतिक्रियाओं से भरी कविताएँ लिखता है। इससे नये कविता में विषय वैविध्य के साथ शिल्पविधा में वैविध्य भी बढ़ गया है। एक दो असमर्थ एवं असहज भावुक कवियों के कारण कुछ हद तक अस्पष्टता एवं असंप्रेषणीयता का दोष नयी कविता पर लगाया जाता है।

नयी कविता में कुछ प्रौढ़ कवियों के कारण देशी और विदेशी दर्शनों का मिश्रण नये रूप में उभरता है। राष्ट्रवाद से हट कर सामान्य पाठक विश्वमानव की दृष्टि को अपनाने में नयी कविता प्रोत्साहन दे रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अब्राम्स, साहित्यिक शब्दों की एमएच ए शब्दावली। बैंगलौरः प्रिज्म बुक प्रा। लिमिटेड 1993, भारतीय पुनर्मुद्रण।

2. एडम, इयान और हेलेन टिफिन, एड विगत, अंतिम पोस्टः उपनिवेशवाद के बाद का सिद्धांत और आधुनिकतावाद, न्यूयॉर्क और लंदन एटः पर Hanverster Wheatsheaf, 1991

3. अहमद, ऐजाज, थ्योरी में कक्षाएं, राष्ट्र, साहित्य लंदन और न्यूयॉर्कः वर्सो, 1992 रलमलं, सच्चिदानंद Hirananda वात्स्यायन, एड

4. तार सप्तक, वाराणसी और दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण, 1970. संस्करण, दोसरा सप्तक

5. वाराणसी और दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दूसरा संस्करण, 1970. .....संस्करण। तीज सप्तक, वाराणसी और दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण, 1967।

6. संकेत और मौन। दिल्लीः एन एटियल पब्लिशिंग हाउस, 1976।

7. त्रिशंकु, बीकानेरः सोर्य प्रकाशन मंदिर, 1973, अमूर, जीएस वगैरह, एड कॉमनवेल्थ साहित्य में भारतीय रीडिंग।

8. नई दिल्लीः स्टर्लिंग पब्लिशर्स, 1985. एशक्रॉफ्ट, बिल, गैरेथ ग्रिफिथ्स और हेलेन टिफिन। साम्राज्य वापस लिखते हैं

9. थ्योरी और पोस्ट-औपनिवेशिक साहित्य में अभ्यास। लंदनः रूटलेज, 1989. एंडरसन, बेनेडिक्ट, कल्पित समुदायः राष्ट्रवाद की उत्पत्ति और प्रसार पर विचार।

10. लंदनः वर्सो, 1983, अरबिंदो, श्री द लाइफ डिवाइन, न्यूयॉर्कः श्री अरबिंदो लाइब्रेरी, 1949. द सुपर मैन, पॉन्डिचेरीः श्री अरबिंदो आश्रम, 1968

11. में रक्षा भारतीय संस्कृति के। न्यूयॉर्कः श्री अरबिंदो लाइब्रेरी, 1953।

12. अवस्थी, डॉ. ओम प्रकाश, नाइ कविता रचन-प्रकृति, कानपुरः पुस्तक प्रकाशन , 1972 प्रीपावकम, सुकुमार

13. 'तुलनात्मक विधि में नुकसान - माल्यलम से एक केस-स्टडी 'तुलनात्मक साहित्य में अध्ययन, एड बर्नार्ड थ्मद्र और लालकृष्ण ललचचं चंदपांत

14. बॉम्बेः ब्लैकी एंड संस, 1985. बर्थेस, रोलैंड, छवि संगीत-पाठ, न्यूयॉर्कः हिल और वैंग, 1977. बेनेट, टोनी। साहित्य के बाहर।

15. न्यूयॉर्क और लंदनः राउटलेज, 1990. बेस्टन , जॉन बी। 'एन इंटरव्यू विद निसिम एजेकियल', हिंदी में विश्व साहित्य लिखा गया ।

Corresponding Author

Rachna*

Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

www.ignited.in